International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 1; January 2017; Page No. 38-42

जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन

[1] सुनील मणि त्रिपाठी, [2] डॉ0 जय सिंह

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।
[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, म प्रदेश, भारत।

सारांश
शालेय संवेगात्मक वातावरण से तात्पर्य संवेगों का विकास एक निश्चित अनुक्रम में होता है तथा विकास के प्रत्येक चरण में कुछ नये रूप परिलक्षित होते हैं। संवेग से तात्पर्य उत्तेजना से है अर्थात संवेग शब्द अंग्रेजी शब्द Emotion का पर्यायवाची है। इसको लैटिन भाषा में Emovere कहते है। जिसका अर्थ ''हिला देना, उत्तेजित होना है।'' जब भी संवेग की स्थिति आती है, व्यक्ति में बेचैनी आ जाती है, वह कुछ भी असामान्य व्यवहार प्रकट कर सकता है। हृदय की धड़कन बढ़ जाती है, चेहरे पर मलिनता छा जाती है, अचेतन में व्याप्त अनेक सुप्त प्रक्रिया है, जिसमें मानसिक एवं शारीरिक दोनों प्रकार की प्रक्रियाएँ सम्मिलित है। जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्रों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 31.07 तथा मानक विचलन 7.06 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 31.37 तथा मानक विचलन 7.24 है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 29.30 तथा मानक विचलन 6.87 है तथा शहरी विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि 32.23 तथा मानक विचलन 6.48 है।

मूल शब्दः जौनपुर जिला, माध्यमिक स्तर, छात्र, संवेगात्मक वातावरण, शैक्षणिक उपलब्धि

1. प्रस्तावना
शिक्षा और जीवन में कोई अन्तर नहीं है, अतः जीवन की सभी समस्याएँ शिक्षा की समस्याएँ बन जाती हैं। मानव जाति ने अब तक जो भी अनुभव संचित किये हैं, वे इतने अधिक हैं कि किसी व्यक्ति के लिए सम्पूर्ण अनुभवों पर समान क्षमता से अधिकार प्राप्त करना असम्भव सा है। अतः अनुभवों को खण्डों में बांट दिया गया है। समस्त संचित ज्ञान–राशि को कई विभागों में विभक्त कर दिया गया है। इन विभागों को 'विषय' कहा जाता है। वस्तुतः अनेक विषयों का अस्तित्व नहीं है किन्तु सुविधा के लिए ज्ञान को कई खण्डों में बाँटकर प्राप्त किया जाता है। कुछ व्यक्ति ज्ञान की किसी शाखा का अध्ययन करते हैं तो कुछ अन्य व्यक्ति दूसरी शाखाओं का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस प्रकार विशेष योग्यता सम्भव होती है तथा संचित ज्ञान–राशि के कुछ अंश को प्राप्त करके उसी अंश की समृद्धि भी सरलता से की जा सकती है। इससे ज्ञान–कोष के विकास में सहायता मिल जाती है, अन्यथा ज्ञान की वर्तमान मात्रा में वृद्धि नहीं हो सकती। इस दृष्टि से शिक्षा भी ज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हो रही है जिसमें इस बात पर विचार किया जाता है कि अब तक के प्राप्त ज्ञान को नई पीढ़ी को किस प्रकार प्रदान किया जाय।

बच्चों का संवेगात्मक वातावरण, उसके व्यक्तित्व के भावात्मक तत्व और निश्चित पदार्थो, व्यक्तियों और परिस्थितियों के प्रति उसके भाव से निर्मित होता है। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है और विकसित होता है, उसके अनुभव तथा ज्ञान की सीमा विस्तृत होती हो जाती है, उसकी अन्योन्यक्रिया बढ़ती जाती है तथा उसे प्रभावति करने वाले व्यक्तियों की संख्या भी बढ़ती जाती है। अपने माता–पिता, मित्र, भाई–बहन, शिक्षक और अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से उसके पारस्परिक संबंध् और उनके प्रति अपनी संवेदनाओं के द्वारा ही बच्चा प्रमुख रूप से निर्देशित होता है।

संवेगात्मक बुद्धि दो शब्दों 'संवेग' तथा 'बुद्धि' से मिलकर बना है, संवेग तथा बुद्धि एक दूसरे के सहयोगी तथा परस्पर समांतर क्षमतायें है। संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं की तीव्रता, बुद्धि को सही दिशा में विचार करने हेतु प्रेरित करती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को उसकी अद्वितीय क्षमताओं तथा उद्देश्यों का अनुसरण करने की प्रेरणा प्रदान करती है तथा उसकी अंतःस्थित क्षमताओं, आंकाक्षाओं तथा मूल्यों को क्रियाशील बनाती है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह स्वयं तथा दूसरे व्यक्तियों की भावनाओं को पहचान तथा समझ सके तथा उनके प्रति उचित व्यवहार कर सकें। संवेगात्मक बुद्धि के कारण ही व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्रभावी रू‍प से संवेगों की उर्जा तथा सूचना का प्रयोग करता है।

शिक्षा व्यक्ति के विचारों को जो कि सांवेगिक एवं बौद्धिक होते है कि पूर्ण अभिव्यक्ति में सहायक होता है, इसके द्वारा बालक अपने संवेगों पर नियंत्रण, सहानुभूति, स्वआत्मन, स्वप्रबंधन, सामाजिक जागरूकता, तनाव नियंत्रण, आदि करना सीखता है एवं इसके द्वारा उपयुक्त निर्णय लेकर प्रत्येक क्षेत्र में समायोजित होकर अच्छा प्रदर्शन करता है। जिन बालकों अथवा छात्रों में संवेगात्मक स्थिरता का अभाव होता है तथा वातावरण के साथ समायोजन करने में वे कठिनाई का अनुभव करते है। अतः शिक्षा द्वारा छात्रों को सांवेगिक रूप से परिपक्व बनाकर उन्हें वातावरण में उचित समायेजित किया जा सकता है।

विद्यालय बच्चों के अनुभविक जगत में पाठशाला का महत्वपूर्ण स्थान होता है। क्रमानुसार और मनोवैज्ञानिक दोनों रूपों से विद्यालय की शुरुआत बच्चे के जीवन में एक विशिष्ट समयावधि की समापित है। पहली बार बच्चों को एक समूह के विभिन्न कार्यव्यवहारों के अनुकूल बनाए जाने की सायास कोशिश की जाती है, वह भी उन व्यक्तियों द्वारा जो उनके माता–पिता या परिजन नहीं होते।

शोधार्थी शिक्षा के कार्य में विगत कई वर्षो से संलग्न है। शैक्षिक गतिविधियों के प्रति शोधार्थी की रुचि शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नवाचारी कार्य करने की भावना से इस बात की प्रेरणा है कि वह जौनपुर जिले के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का शालेय

संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन हेतु शोध इस क्षेत्र के साथ ही साथ देश के अन्य क्षेत्रों में भी शैक्षिक स्थिति को अधिक सशक्त व प्रभावी बनाने की दिशा में सार्थक सिद्ध हो सके।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल जौनपुर जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों का शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर होने वाले प्रभाव की वर्तमान स्थिति तथा उसमें आने वाली कठिनाइयों का आंकलन किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. उद्देश्य

- जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र जिला जौनपुर जिला है। इसके अन्तर्गत 6 तहसील – शाहगंज, जौनपुर, बदलापुर, मेरिअहु, मछलीशहर एवं केरकट हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक स्तर, ब्लाक शिक्षा केन्द्र, जिला शिक्षा केन्द्र द्वारा किये जाने वाले शैक्षणिक उपलब्धि सम्बन्धी कार्यक्रम इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु सांख्यिकी विधि का उपयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि

प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, सह–सम्बन्ध, काई परीक्षण, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का आवश्यकतानुसारप्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

जौनपुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नहीं है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 5–5 विद्यालय कुल 30 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन द्वारा अध्ययन हेतु किया गया। विद्यालयों का चयन करते समय यह विशेष रूप से ध्यान रखा गया कि सभी तहसीलों के विद्यालय ऐसे हो जो अपने–अपने क्षेत्र का प्रतिनिधित्व कर सके तथा ये सभी विद्यालय षहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों से संवंधित हो। षोध कार्य के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्ष के रूप में चयनित विद्यालयों से 10 छात्र और 10 छात्राएं कुल 600 का चयन दैव निदर्षन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – पोण्डेय, के.पी.[1], राय एम.एम. (1976)[2], कौल, लोकेश (1998)[3], कपिल, एच.के. (1996)[4], त्रिपाठी, मनीष व डॉ. जय सिंह (2016)[5, 6].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

जौनपुर जिला वाराणसी प्रभाग के उत्तर–पश्चिम भाग में स्थित है। इसकी भूमि क्षेत्र 24.24°N से 26.12°N अक्षांश और 82.70°E और 83.50°E देशांतर के बीच फैली हुई है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 4038 कि.मी.^{2} है। इसके अन्तर्गत 6 तहसील – शाहगंज, जौनपुर, बदलापुर, मेरिअहु, मछलीशहर एवं केरकट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक –01

"जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

तालिका 1: जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नहीं)	11	3.67	11	3.67
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति)	118	39.33	111	37.00

3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर)	147	49.00	151	50.33
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	24	8.00	27	9.00

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 1 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 300 छात्र एवं 300 छात्राओं का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 छात्रों में से 3.67 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 39.33 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 49.00 प्रतिशत छात्र उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 8.00 प्रतिशत छात्रों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 छात्राओं में से 3.67 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 37.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 50.33 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 9.00 प्रतिशत छात्राओं ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

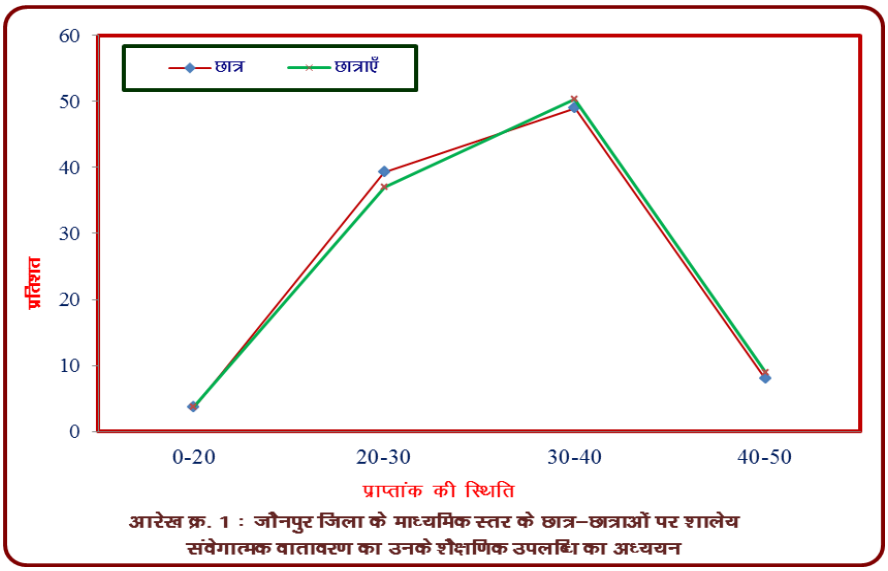

आरेख क्र. 1 : जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

तालिका 2: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	300	31.07	7.06	–0.51
छात्राएँ	300	31.37	7.24	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (300-1) + (300-1)$
$= 299+ 299$
$= 598$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी में न्यादर्श में चयनित जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विष्लेशण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्रों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की औसत उपलब्धि 31.07 तथा मानक विचलन 7.06 है तथा छात्राओं का औसत उपलब्धि 31.37 तथा मानक विचलन 7.24 है।

जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –0.51 है।

5.98 d.f. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –0.51 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। अतः जौनपुर जिला के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

परिकल्पना क्रमांक – 02

"शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

तालिका 3: शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन			
		ग्रामीण		शहरी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 से ऊपर किन्तु 20 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नहीं)	17	5.67	4	1.33
2.	20 अंक से अधिक किन्तु 30 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति)	142	47.33	104	34.67
3.	30 अंक से अधिक किन्तु 40 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर)	132	44.00	163	54.33
4.	40 अंक से अधिक किन्तु 50 अंक से कम (उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर)	9	3.00	29	9.67

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त तालिका क्रमांक – 2 से न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत 300 ग्रामीण एवं 300 शहरी विद्यार्थियों का उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव सम्बंधी जानकारी का संकलन किया गया है। शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 ग्रामीण विद्यार्थियों में से 5.67 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 47.33 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 44.00 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 3.00 प्रतिशत ग्रामीण विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 300 शहरी विद्यार्थियों में से 1.33 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति नही की, जबकि 34.67 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की प्राप्ति कर ली है तथा 54.33 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर अग्रसर है एवं 9.67 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने उपलब्धि परीक्षण पर शालेय संवेगात्मक वातावरण के प्रभाव की ओर पूर्णरूप से अग्रसर है।

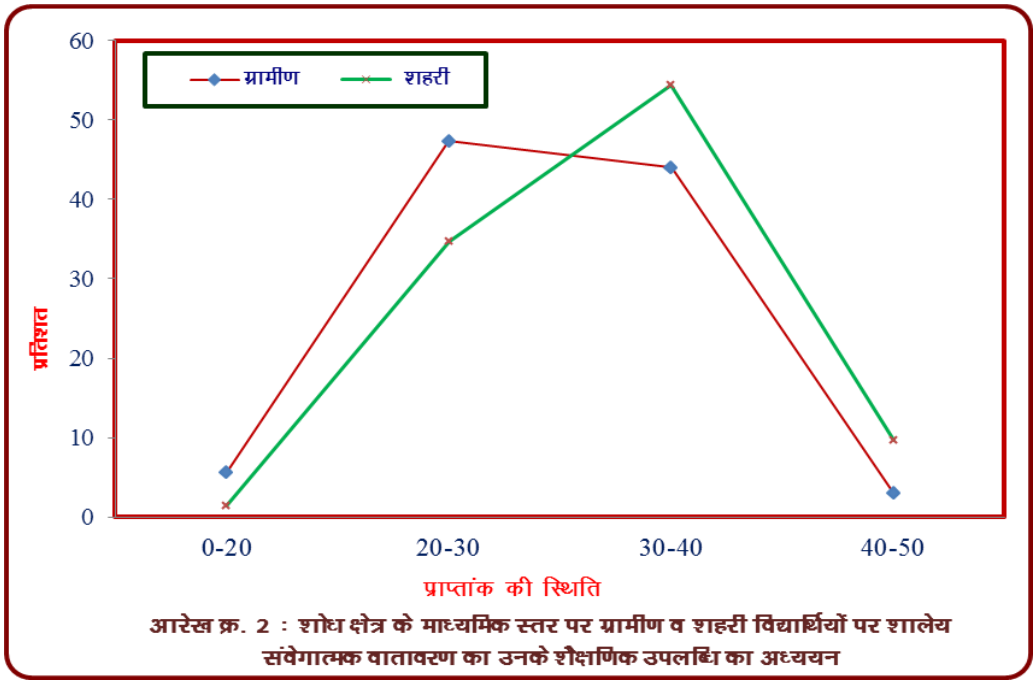

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

तालिका 4: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
ग्रामीण	300	29.30	6.87	–5.38
शहरी	300	32.23	6.48	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (300-1) + (300-1)$
$= 299 + 299$
$= 598$

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विष्लेशण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव की

औसत उपलब्धि 29.30 तथा मानक विचलन 6.87 है तथा शहरी विद्यार्थियों का औसत उपलब्धि 32.23 तथा मानक विचलन 6.48 है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का सार्थकता सारणी में किया गया है। गणना से प्राप्त 't' का मान –5.38 है।

5.98 कण्णि पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.60 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.65 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान –5.38 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों पर शालेय संवेगात्मक वातावरण का उनके शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित

11. संदर्भ

1. पाण्डेय, के.पी. : शैक्षिक अनुसंधान की रूपरेखा, अमित प्रकाशन, मेरठ.
2. राय, डॉ. एम.एम. मृदा विज्ञान, भोपाल (भारत) : मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1976. पृष्ठ. 202.
3. कौल लोकेश – शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.
4. कपिल, एच.के. – सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996.
5. त्रिपाठी, मनीष एवं डॉ. जय सिंह – रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Advanced Educational Research. 2016; 1(5):48-50.
6. त्रिपाठी, मनीष एवं डॉ. जय सिंह – रीवा संभाग में हाई स्कूल स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(9):05-07.